

॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्राह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिष्ठाय भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलूलम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभे वपम्। श्रव्याया इषुकारम्। हृत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धयै जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्। आर्त्यै परिविविदानम्। अरिभ्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुज्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उत्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः स्रामम्। स्वप्रायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षाया अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्जविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्। औपद्रष्टाय सङ्गहीतारम्। बलायानुचरम्। भूमे परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ठ्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभिषेत्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपायं
पात्रनिर्णेगम्। देवल्लोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्यं
उपसेत्तारम्। अवन्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुधम्। वर्षिष्ठाय नाकाय
परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायांश्चपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्।
वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्।
श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसुरम्। शोकायाभिसुरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां
त्रिस्थिनम्। योगाय योत्तारम्। क्षेमाय विमोत्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्।
निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवत्सराय पर्यारिणीम्। परिवत्सराया-
विजाताम्। इदवत्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वत्सरायातीत्वरीम्। वत्सराय विजर्जराम्।
संवत्सराय पलिक्रीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्डलाभ्यः शौष्कलम्।
पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्यं आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः
पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भृषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्।
महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवधम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खधम्।
ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्॥१३॥

बीभत्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय
हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्।
वृद्ध्या अपगल्भम्। सृशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुश्रलूमा लभते। वीणावादं गणकं गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय
भद्रवतीम्। तूणवधं ग्रामण्यं पाणिसङ्घातं नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय
तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदशम्। द्वापराय बहिः
सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः
सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यां तम्।
यो गां विकृन्तन्तं मांसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय
वशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः
किलासम्। अहं शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानं व्यानमुदानं समानं तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा
लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्। अतिकृशमत्यसलम्। अति-
शुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्णमतिलोमशम्। अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमति-
मेमिषम्। आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्ध्यै नदीभ्य उध्सादेभ्य ऋत्ये भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्वायै वीमध्सायै
दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥